मधुशाला संहिता – बारकोड

शिल्पा फड़के

1980 के दशक में हम जब बड़े हो रहे थे तब बार-कोडों का अर्थ कुछ और ही होता था। विदेशी वस्तुओं पर अंकित होते थे। वह एक ऐसी चीज होती थी जो चिह्नित भी थी और उत्तेजक भी। आज ये बार-कोड हमारे बेहद जान-पहचान से हैं। इनका उपयोग उच्च स्तरीय दुकानों में अंतर्राष्ट्रीय उपभोक्ताओं के व्यवहार को मद्देनजर रखकर किया जाता है।

हाल के वर्षों में मुंबई में बार-कोड शायद उससे जुड़ा हुआ होते हुए भी कुछ अलग सा हो गया हैं। मैं 'मधुशाला संहिता' का मतलब जरूर बताना चाहूंगी। जब हम मधुशाला संहिता की बात करते हैं तो क्रेडिट कार्ड संहिता, व्यवहार संहिता की बात और दो किस्म की मधुशालाओं की बात करना भी जरूरी हो जाता है। ये दो किस्म की मधुशालाएं हैं, गैर-कानूनी घोषित होने के कगार पर 'डान्स बार' तथा नाइट क्लब व डिस्कोथीक बार।

मैं इस लेख में इन दो किस्म की (बारस्) मधुशालाओं के संदर्भ में तीन बातों पर अपना ध्यान केन्द्रित करूंगी। पहले इन मधुशालाओं का स्थान/दूसरे अन्दर की सजावट में स्थानिक विभाजन और उनकी अस्पष्ट ढांचागत शक्ति का श्रेणीबद्ध संगठन। तीसरे इन स्थानिक विभाजनों और इनके भीतर होने वाले क्रियाकलापों की आचार संहिता।

शहर के संदर्भ में दो किस्म की मधुशालाएं हैं। जिन मधुशालाओं में नाच गाना होता है वे अपने -आप को अप्रत्यक्ष रखना पसन्द करती हैं – यानी सब कुछ छिपा कर रखा जाता है। कोई भी मधुशाला डान्स-बार होने का विज्ञापन नहीं देती या फिर ऐसी कोई घोषणा नहीं करती है। वहाँ आने वाले ग्राहकों को या तो इसकी जानकारी रहती है या फिर उन्हें दूसरे ग्राहकों से पता लग जाता है। बाहर टंगी सूचना पट्टी पर सिर्फ रेस्तरां या रेस्तरां और बार लिखा रहता है। गत वर्ष इनमें से अनेक को देवी-देवताओं के नाम दे दिए गए थे। बहुत जल्दी महाराष्ट्र सरकार द्वारा इसे ईशनिन्दा*1 घोषित कर दिया गया। ये डान्स बार शहर की बदनाम गलियों में स्थित

हैं। विशेष रुचियां रखने वाले उच्च वर्ग के ग्राहकों के लिए बड़े उच्च स्तरीय बाजारों में बड़े तामझाम से इन मधुशालाओं का प्रचार-प्रसार होता है। ये शहर के महंगे हिस्सों में स्थित होती हैं। वहाँ गाड़ियों को पार्क करने के लिए सेवक मौजूद रहते हैं। इन मधुशालाओं के नाम अपने देश की सीमाओं के बाहर देशों में चल रही मधुशालाओं की नकल होते हैं। इनके बारे में देर रात दिखाए जा रहे टेलिविजन कार्यक्रमों में और समाचार पत्रों के 'पेज थ्री' में प्रचार-प्रसार होता है।

ये उच्च स्तरीय मधुशालाएं विश्वव्यापी उपभोक्तावाद के अलग, विशिष्ट संसार का प्रतिनिधित्व करती हैं। जबकि दूसरी ओर डॉन्स बार शहर के उस निचले स्तरमान को दर्शाते हैं जिन्हें हाशिए पर डाला जाना पसंद किया जाएगा।

दोनों ही किस्म की मधुशालाओं में नृत्य करने के लिए उपलब्ध जगह लगभग नगण्य होती है। नृत्य करने की जगह और ग्राहकों के बैठने का स्थान पहले से तय होता है। नर्तकी अपना टिप लेने के लिए ग्राहक के नजदीक जा सकती है। बेशक यह जरूरी नहीं कि उसे कुछ जरूर मिलेगा ही। जुलाई, 2004 में महाराष्ट्र सरकार ने एक परिपत्र जारी किया। इसमें मधुशालाओं के मालिकों से कहा गया था कि नर्तकियां ग्राहकों से पाँच फीट की दूरी पर नृत्य करेंगी। यह भी आदेश दिया गया था कि नर्तकियों के चारों ओर 3 फुट ऊँची दिवार बनाई जाए और आठ नर्तकियों के लिए मंच 120 वर्ग फीट होना चाहिए। *2 ऐसा, नर्तकियों को अनुशासित रखने के लिए किया जाना था।

इस निशानदेही की वजह थी डान्स बार के स्थान के उल्लंघन को अनुशासन में रखना। चूंकि यहाँ सार्वजनिक प्रदर्शन होता है सो उस दायरे में इस स्थान में दर्शक प्रवेश न कर पाएं इसकी सावधानी बरती जानी थी। इस तरह की निशानदेही का एक और भी कारण था। डॉन्स बार को एक दूषित जगह माना जाता है। यहाँ अतिचार, उल्लंघन की सम्भावना बनी रहती है।

उच्च स्तरीय मार्किट में चल रहे डिस्कों में नृत्य करने वाली जगह पर लिंगभेद नहीं किया जाता है। दरअसल यहाँ पुरुषों, महिलाओं को आपस में मिलने - जुलने दिया जाता है। इस तरह इस इतर लिंगी कामुकता को आधुनिकता का प्रतीक माना जाता है। बेशक मधुशाला संहिता में क्रेडिट कार्ड का उपयोग किया जा सकता है पर और नियमों, खास तौर से इतरलिंग कामुकता जैसे मुद्दों के बारे में कोई स्पष्टता नहीं है। इस स्थान का मतलब तब बदल जाता है जब यहाँ कुछ ऐसी चीज़ों – यहाँ मेरा इशारा क्रेडिट कार्ड की ओर है – की वजह से स्थान का अर्थ ही बदल जाता है। क्रेडिट कार्ड के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय लेन- देन किया जा सकता है। इस तरह यहाँ हो रहे क्रिया-कलाप और स्थान के मायने ही बदल जाते हैं।

अगर इन दोनों स्थानों को निष्पक्ष होकर देखा जाए तो ये एक- दूसरे से भिन्न नजर आते हैं। दोनों जगहों में शराब, संगीत, नृत्य, औरतें और पुरुष होते हैं। जैसा कि स्तम्भ लेखक अनिल धारकर ने कहा हैं। *3 एक ग्राहक मधुशाला में किसी एक नर्तकी के साथ बाद के लिए मुलाकात तय कर सकता है, वैसे ही कोई दो लोग किसी ऐसे शयनकक्ष में बाद में मिलना तय कर सकते हैं जहाँ से समुद्र का नजारा भी उपलब्ध हो।

तो फिर इन दो स्थानों का अर्थ कैसे बदल जाता है? एक बदनाम और दूसरा सम्मान योग्य। मुख्य अन्तर बस यही है – निजी और सार्वजनिक स्थानों को दिए जाने वाले महत्व में अंतर। तकनीकी नजर से देखा जाए तो दोनों स्थान एक समान निजी और सार्वजनिक हैं।

सार्वजनिक के मायने हैं कि यहाँ कोई भी अन्दर आ सकता है। निजी स्थानों में प्रवेश को मालिक नियंत्रित कर सकता है। वह अतिरिक्त दाम वसूल सकता है। यह वसूली खाने के बिल या प्रवेश शुल्क के रूप में या दोनों ही तरह से वह कर सकता है। नृत्यगृह बार में नर्तकी और ग्राहक के सम्बध सार्वजनिक होते हैं। जबकि निजी डिस्को आदि में यह दो व्यक्तियों का निजी मामला होता है। निजी सम्बधों को एक ओर मान्यता दी जाती है तो डान्स बार में इसे गैर-कानूनी सम्बध और स्थान को दूषित माना जाता है। निजी बड़ी मार्किट में चल रहे बार में निजी सम्बधों के चलते स्थान न सिर्फ आदर की नजर से देखा जाता है बल्कि अंतर्राष्ट्रीय उपभोग की नजर में लगभग पवित्र भी माना जाता है।

अंतर्राष्ट्रीय शहरी संदर्भ में आदर, नैतिकता और स्थान/स्थिति तय करती है कि कौन, किस स्थान का उपयोग कर सकता है। यह भी तय किया जाता है कि कौन-सा स्थान सम्मान्य है और कौन-सा- नहीं।

टिप्पणी:

*1 http://in.rediff.com/news/2004/feb/27bars.htm देखें।

*2 द इंडियन एक्सप्रेस- 29 जुलाई,2004

*3 अनिल धारकर मिड-डे - अगस्त 25, 2004

उल्लेख : शिल्पा फड़के वास्तुशिल्प में स्थान का अर्थ समय, स्थान, लोग जून, 2006 पृष्ठ 52-53

अनुवादक : सरोज वशिष्ठ

■ ■ ■ ■ ■

Kian
Kian